

Saravajanik Karyakram

Date : 12th April 1995
Place : Kolkata
Type : Public Program
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 08
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

इस कलियुग में मनुष्य जीवन की अनेक समस्याओं के कारण विचलित हो गया है और घबरा रहा है। कलियुग में जितने सत्य को खोजने वाले हैं, उतने पहले कभी नहीं थे और यही समय है जब कि आपको सत्य मिलने वाला है। लेकिन ये समझ लेना चाहिए कि हम कौनसे सत्य को खोज रहे हैं? क्या खोज रहे हैं? नहीं तो किसी भी चीज़ के पीछे हम लग कर के ये सोचने लग जाते हैं कि यही सत्य है। इसका कारण ये है कि हमें अभी तक केवल सत्य, ऑबसल्यूट ट्रुथ मालूम नहीं। कोई सोचता है कि ये अच्छा है, कोई सोचता है कि वो अच्छा, कोई सोचता है कि जीवन और ही तरह से बिताना चाहिए। तो विक्षुब्ध सारी मन की भावना और भ्रांति में इन्सान घूम रहा है। इस संभ्रांत स्थिति में उसको समझ में नहीं आता है कि, 'आखिर क्या कारण है, जो मेरे अन्दर शांति नहीं है। मैं शांति को किस तरह से अपने अन्दर प्रस्थापित करूं। मैं ही अपने ही साथ लड़ रहा हूँ, झगड़ रहा हूँ, कुछ समझ में नहीं आता।' यही कलियुग की विशेषता है और इसी कारण इस कलियुग में ही मनुष्य खो देता है।

पहले इस तरह की संभ्रांत स्थिति नहीं थी। मनुष्य अपने मानवता से ही प्रसन्न था। अब आप इस मानव स्थिति में आ गये हैं। इस स्थिति में आपको केवल सत्य मालूम होता तो कोई झगड़ा ही नहीं होता। हर एक इन्सान एक ही बात सोचता और कुछ भी समझाने से, बतलाने से मनुष्य सिर्फ मानसिक हो जाता है, मेंटल हो जाता है। पढ़ पढ़ के, पढ़ पढ़ के भी मानसिक हो जाता है और उसमें कोई शांति नहीं होती, उसमें कोई आराम नहीं होता। उसमें कोई चैन नहीं आता। तो सत्य क्या है, ये समझ लेना चाहिए। अब बात ये है कि मैं जो कुछ भी आपके सामने बात कहूँ इसे आप एकदम से मान्य मत करें क्योंकि अंधश्रद्धा से हम लोग पहले ही पीड़ित हैं। स्पेशली बंगाल में तो मैं सोचती हूँ कि यहाँ पर इस कदर तांत्रिक, ये, वो सब ने जकड़ डाला और जब हम देखते हैं कि जो धर्म के नाम पर भी जो बहुत बोलते हैं और चलते हैं वो भी पीड़ित हैं। वो भी बीमार हैं। उनको भी ये तकलीफ़ है, वो तकलीफ़ है और वो भी आपस में लड़ रहे हैं, झगड़ रहे हैं। इसका मतलब उन्होंने अभी तक सत्य को प्राप्त नहीं किया। सिर्फ उसके बड़े बड़े इशतिहार लगा के रखे हैं।

तब मनुष्य घबरा के ये पूछता है, कि सत्य है क्या? सत्य और प्रेम ये दोनों एक चीज़ है। आश्चर्य की बात है कि इसका मिलाफ़ लोग समझ नहीं पाते। समझ लीजिये कि आप किसी को नितांत प्रेम करते हैं। तो आप उसके बारे में हर एक छोटी छोटी बातें जान लेते हैं। पर ये परमात्मा का प्रेम है, ये दैवी प्रेम है। इस प्रेम को सत्य मान लीजिये ऐसा मैं नहीं कहूँगी, पर ये सिद्ध हो सकता है। उसके लिये आपको इस मानव चेतना से, ह्यूमन अवेअरनेस से उपर उठना होगा तभी आप समझ पायेंगे कि सत्य और प्रेम एक ही चीज़ है। और ये दोनो ही चीज़, दोनो ही बातें, दोनो ही गुण ऐसे मनुष्य में होते हैं जिसने आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त कर लिया हो। और जिसने अभी आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त नहीं किया और जो सिर्फ ऊपरी ऊपरी बातें करता है, काफ़ी लेक्चर देगा या काफ़ी कर्मकांड करायेगा उससे आज तक किसी का फायदा हुआ नहीं और न होगा। इसके लिये जरूरी है कि हम समझ लें कि सत्य क्या है। हम ये शरीर, बुद्धि, मन, अहंकारादि उपाधियाँ नहीं, हम शुद्ध आत्मा है, ये सत्य है। क्योंकि

हम कहते हैं, कि ये हमारा शरीर, ये हमारा मन, ये हमारी बुद्धि, हमारी, हमारी, हमारी, मेरी, मेरी, मेरी। ये 'मैं' है कौन? इसे जानना है। और ये 'मैं' ही शुद्ध आत्मा है। जो आपके हृदय में बिराजता है, वही शुद्ध आत्मा! उसको प्राप्त करना, उसका प्रकाश अपने चित्त में लाना ही एक तरह से आत्म का दर्शन है। और दूसरा सत्य ऐसे है कि जैसे आप देखते हैं कि चारों तरफ फूल हैं। इतने सुंदर फूल! और ये फूल जिस पृथ्वी तत्त्व से निकले हैं, कितना चमत्कार है, कि हर एक तरह का फूल अलग अलग तरीके से आता है। और इसके लिये कुछ पैसा नहीं देना पड़ता। माँ का पृथ्वी तत्त्व जो प्रेममय है, वो अपने आप उसको बना पाता है, सुगन्धित करता है और रंगबिरंगों से भर देता है। ये एक महान आश्चर्य की बात है, कि हम इस बारे में सोचते ही नहीं, कि जीवित कार्य कैसे हैं। जैसे किसी डॉक्टर से पूछे, कि हमारा हार्ट कौन चलाता है? हमारा हृदय कौन स्पंदित करता है? तो डॉक्टर ये कहेगा कि इसकी एक ऑटोनॉमस नर्वस सिस्टीम है। तो ये ऑटो है कौन? स्वयंचालित संस्था है। तो ये स्वयं कौन है? वो स्वयं ही आपका आत्मा है। इसको प्राप्त कर लेना, उसका प्रकाश अपने अन्दर लाना ही आत्मसाक्षात्कार है। और इस चारों तरफ फैली हुई परमात्मा की प्रेम शक्ति, जिसने ये सुन्दर फूल उगाये, जो हमारे हृदय को भी चलाता है उससे एकाकारिता करना ये योग है। यही योग है और इसका जन्मसिद्ध अधिकार आप सब मानव जाति को है। लेकिन इसको प्राप्त करने के लिए अगर कोई मूढ़ हो तो वो प्राप्त नहीं कर सकता। कोई बेवकूफ हो वो नहीं। कोई उदाम, मगूर हो वो नहीं प्राप्त कर सकता। उसके लिये नम्रता चाहिये और माँग चाहिये कि हमें ये चीज़ चाहिये। हृदय से, प्रेम से अगर मनुष्य अपने को जरा सा भी देखे, तो वो अब एक अधूरा है और उसके अन्दर अनेक शक्तियाँ हैं जिसका प्रादुर्भाव, मैनिफैस्टेशन हो सकता है। लेकिन उसके लिये मनुष्य को ये समझ लेना चाहिये कि नम्रतापूर्वक आप इसे अपने हृदय से माँगे। क्योंकि अगर प्रेम की शक्ति माँगनी है तो प्रेमपूर्वक ही माँगी जाती है। लड़ाई, झगड़े से और परेशान करने से ये शक्ति कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती।

इस शक्ति के बारे में आपको पहले बता ही चुके हैं वो, कि त्रिकोणाकार अस्थि में ये शक्ति कुण्डलिनी नाम की है। अब ये कोई नयी बात मैं नहीं कह रही हूँ। हमारे शास्त्रों में, समझ लीजिये छठी शताब्दि में, शंकराचार्य, उन्होंने ये बात कही। लेकिन तेरह हजार पूर्व मार्कंडेय ने कुण्डलिनी की बात की पर सब संस्कृत भाषा में। इसलिये बारहवी शताब्दि में ज्ञानेश्वर जी ने इसकी बात की है। जब उन्होंने ज्ञानेश्वरी लिखी जो कि गीता पर टीका थी, उसमें छठे अध्याय में उन्होंने लिख दिया कि कुण्डलिनी शक्ति से आत्मसाक्षात्कार घटित होता है। तो उस वक्त के जो धर्ममार्तण्ड थे, उन्होंने कहा, कि नहीं, नहीं ये निषिद्ध है। छठा जो अध्याय है निषिद्ध है। किसी ने पढ़ा नहीं, लिखा नहीं। इस तरह से जो हमारे अन्दर निहित, छुपी हुई जो शक्ति है, जो कि हमें उस स्थिति में पहुँचा सकती है, वो पूर्णतया एक अंधःकारमय, एक जिसको कहना चाहिये कि एक अज्ञानमय, इग्नोरन्स में छिप गयी। फिर हमारे यहाँ एक से एक बुद्धिमान लोग निकले। इंटलेक्चुअल्स। जिसके लिये कबीर ने कहा है कि, 'पढ़ी पढ़ी पंडित मूर्ख भय'। पहले मैं सोचती थी कि पढ़ पढ़ के पंडित मूर्ख कैसे हो जाय? ऐसे कैसे हो सकता है? लेकिन मुझे बहुत मिले ऐसे। उनसे बात करने से पहले वो ही बोले जाते थे। और क्या बोलते थे, भगवान जाने! ये किताब में लिखा है, वो किताब में लिखा है। मैंने कहा, 'आपकी किताब में क्या लिखा है? वो बताइये।' तो हम अपने से अनभिज्ञ, अपने से अपरिचित, दूसरों की ही बातें अपने खोपड़ी में भर लेते हैं। ये तो इंटलेक्चुअल साईट हो गयी। और दूसरी हो गयी भक्ति की साईट। तो उसमें भी एक तरह का नशा है, चेतना नहीं है। दोनों चीज़ में एक तरह से

वास्तविकता से दूर, असलियत से परे, रिऑलिटी से बिल्कुल दूर हम खड़े हैं।

अब हम आपको एक उदाहरण देंगे। आपके यहाँ 'हरे रामा हरे कृष्णा' का बहुत जोर चल रहा है। लेकिन शिकागो में मैं गयी थी। शिकागो में उनके जो गुरु हैं वो आयें तो बिल्कुल पतली धोती पहन के और उपर एक बनियन पहन के और इतनी ठंड थी कि मैं तो शॉल में भी ठिठुर रही थी और वो भी ठिठुर रहे थे। मुझे मिलने आयें। तो मैंने कहा कि, 'आप ये क्या पहने रहे हो? ये ऐसी पतली धोती क्यों पहने हुये हो भाई इतनी ठंड है। मैं तो माँ हूँ नां!' तो कहने लगे कि, 'बात ये है कि मेरे गुरु ने कहा, कि आपको धोती पहननी चाहिये, तभी आपका मोक्ष होगा।' मैंने कहा, 'अच्छा!' हमारे भारत वर्ष में ८०% लोग धोती पहनते हैं। बंगाल में तो और भी ज्यादा। तो इन सब का मोक्ष होने वाला है तो तुमको स्थान कहाँ मिलेगा। फिर उसने बाल सब मुंडाये हुये थे बेचारे ने और एक चोटी रखी थी। तो मैंने कहा कि, 'ये बाल क्यों मुंडवा लिये।' कहने लगे कि, 'गुरु ने कहा कि जब तक बाल नहीं मुंडवाओगे तब तक तुम्हारा मोक्ष नहीं हो सकता।' उस पर कबीर ने बड़ा सुन्दर कहा है कि, 'अगर बाल मुंडाने से आप स्वर्ग में जा सकते है, तो जिस मेंढे के दो बार बाल मुंडवाये जाते हैं वो आपसे पहले पहुँच जायेगा।' और वो इसको (बाल मुंडवाने की बात) मानते हैं। बड़ी श्रद्धापूर्ण रीति से। मुझसे नाराज हो गये कि, 'आप मेरे गुरु के विरोध में बोल रहे हैं।' 'नहीं' मैंने कहा 'मैं माँ हूँ नां! तो इसलिये पूछ रही हूँ कि ये आपकी दुर्दशा क्यों बनायी?'

फिर दूसरी बात समझने की है, जो कि उपवास करना। ये नहीं खाओ, वो नहीं खाओ, उपवास करो, सर के बल खड़े हो जाओ। 'काहे के लिये?' कहने लगे 'मोक्ष प्राप्ति के लिये।' अगर परमात्मा आपके पिता स्वरूप, प्रेम स्वरूप है, तो कौन पिता चाहेगा, कि अपना बच्चा सर मुंडवा के, पतली सी धोती पहन कर सर के बल खड़ा हो जाये अपने पिता से मिलने के लिये? बताइये कि, कितनी अजीब सी बात है! कोई पिता चाहेगा, कि अपना बच्चा भूखा मरें और माँ, माँ को अगर सजा देनी है तो बच्चे कह देते हैं कि हम खाना नहीं खायेंगे। कि हो गया माँ खतम। कुछ भी गुस्सा होगा तो माँ खतम। आप तो माँ को अच्छे से जानते हैं। तो कौन ऐसा विचित्र तरह का आलंबन जिससे आप मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं। आप जब मनुष्य हुये तो आपने कितना पैसा खर्च किया? आप कौन से तांत्रिक के पास गये थे, गुरु के पास गये थे, कुछ किया था? आप मनुष्य तो हो ही गये ना! तो कोई न कोई अन्दर शक्ति है जिसे मैं प्रेम की शक्ति कहती हूँ। जिसको की रिडम्प्शन की शक्ति कहते हैं। जिससे मनुष्य का उत्थान होता है। जिससे आज आप मनुष्य स्वरूप हो गये। और अगर ये आपके अन्दर शक्ति है, समझ लीजिये अगर है, तो उसका उत्थान क्यों न किया जाय? अब इसके लिये आप पैसा नहीं दे सकते। इसके लिये आप मुझे नहीं खरीद सकते। कोई अपने माँ को खरीदता है क्या? कम से कम अपने देश में तो नहीं खरीदता है। परदेस की बात छोड़िये।

तो इसको पाने की चीज़ क्या है? ये भी आपकी अपनी, व्यक्तिगत अपनी आपकी माँ है, हर एक की और आपके अन्दर जो भी कुछ है, आपका भूतकाल, आपका भविष्य काल, आपका सब कुछ इसमें टेपेकार्ड के जैसे भरा हुआ है। और वो जानता है। ये आपकी माँ, व्यक्तिगत आपकी अपनी अपनी अलग अलग माँ है, वो आपके कुण्डलिनी में स्थित है। और इसकी शक्ति को जागृत करना है तो आप क्या पैसा दे सकते हैं। अगर समझ लीजिये इस पृथ्वी में आपको, उसकी उदर में एक बीज बोना है, तो वो अपने आप सहज, स्पॉन्टेनियसली पनप जाता है। उसके लिये क्या आप सर के बल खड़े हो, नहीं तो कुछ भी करो, उससे फायदा होगा! समझ की बात है। जो

जीवित कार्य है, सारा जीवित कार्य सहज होता है। सहज का अर्थ 'सह' माने आप 'ज' माने आपके साथ पैदा हुआ। ये योग का अधिकार है। इसे आपको प्राप्त कर लेना चाहिये। फिर उससे अनेक लाभ हैं। मुझे पता नहीं योगीजी ने आपको क्या क्या लाभ बताये। लेकिन एक अगर संसार में आप किसी से प्यार करते हैं तो आप नहीं जानते कि सूक्ष्म में आपको कितने लाभ होते हैं। अगर आप प्यार करते हैं, वो भी आप से प्यार करता है, तो दोनों के आदान-प्रदान में एक सूक्ष्म सी सम्बेदना होती है, जो बहुत सुखदायी और शांतिमय होती है। पर आजकल ऐसा प्यार तो देखने को नहीं मिलता। ऐसे तो कोई व्याख्या भी नहीं कर सकता। ऐसे कोई सेंटिमेंट्स नहीं होते। एकदूसरे को नीचे गिराने में, इसकी उसकी गर्दन काटने में हम लोग लगे हुये हैं। प्यार की तो बात छोड़िये। यहाँ तक कि जो बड़े भक्तियोग, फलाना, ठिकाना स्पीच करते हैं और बिठा के लोगों से भक्ति कराते हैं उन सब लोगों का ध्यान सिर्फ पैसा लेने पर है, ये समझ लेना चाहिये। इस पृथ्वी माँ को आपने कितना पैसा दिया है, जो ऐसे सुन्दर सुन्दर फूल आपको दे रही है!

पहली तो चीज़ है कि आप प्यार को खरीद नहीं सकते। खरीदा हुआ प्यार नहीं होता और प्यार की महिमा आप तभी जान सकते हैं, जब आप इस महान चैतन्य के प्यार में डूब जाये। आपकी छोटी छोटी चीज़ भी वो देखता है। जैसे आज ही की बात बतायें कि नागपूर में बहुत अच्छे गाने वाले हैं, बजाने वाले हैं। तो मैंने कहा कि न जाने उनको बुला लें तो अच्छा रहेगा यहाँ पर। क्योंकि बंगालियों का गाना तो बंगालियों ने सुना ही है। दूसरा कुछ सुनाये तो अच्छा है। और देखिये सबेरे वो पहुँच गये अपने आप से। मैंने कहा, 'आप कैसे आये?' तो कहने लगे कि, 'दूर्गापूर में हमारा प्रोग्राम है, वहाँ हमें जाना था तो आ गये हम।' सहज में ऐसी बातें होती हैं कि चमत्कार पे चमत्कार हो रहे हैं। आपको मैं बताऊंगी तो विश्वास नहीं होगा। कि चमत्कार जिसको हम कहते हैं वो चमत्कार नहीं है। क्योंकि ये परमात्मा का प्यार है। उसमें क्या चमत्कार हो सकता है! वो ही स्वयं चमत्कार है।

हमारी दादीजी एक किस्सा सुनाती थी। बहुत मजेदार, कि एक इन्सान परमात्मा को मिलने चला। तो उसको रास्ते में एक आदमी मिला जो सर के बल खड़ा था और कह रहा था कि, 'मैं कब से सर के बल खड़ा हूँ, मुझे भगवान कब दर्शन देंगे। तो जरा भगवान से जा के कहो, कि जरा जल्दी दर्शन दें।' तो ये गये। रास्ते में दूसरा एक बिल्कुल पड़ा था रास्ते के किनारे। तो उसने कहा कि, 'भगवान ने आज मेरे खाने की व्यवस्था नहीं की। उनसे कह देना कि जरा मेरे खाने की व्यवस्था करें।' तो इन्होंने कहा कि, 'अच्छा, हम कह देंगे भगवान से।' तो ये जब भगवान के पास गये, तो उनका काम हुआ सो हुआ। उसके बाद भगवान ने पूछा कि, 'और कोई बात हैं?' कहने लगे कि, 'हाँ, एक बात हैं। वहाँ एक आदमी है बेचारा, सर के बल खड़ा है, आपका इंतजार कर रहा है। आप ऐसा क्यों नहीं करते, कि थोड़ी उस पे मेहरबानी कर दें।' कहने लगे, 'उससे कहो कि थोड़े दिन करते रहो तो अच्छा रहेगा। हो जायेगी मुलाकात।' उसके बाद दुसरे आदमी के बारे में कहा कि, 'उसको तो खाना नहीं मिला। ऐसे रास्ते पे पड़ा है। कह रहा था, भगवान से कह देना।' 'अरे उसे खाना नहीं मिला! ये कैसे हो सकता है? एकदम उसका इंतजाम करो।' तो ये अचंभे में पड़ गया, कि वो तो सर के बल खड़ा है। उसकी कोई परवाह नहीं और ये ऐसे ही रास्ते पर ऑर्डर दे रहा है, इसकी इतनी परवाह कर रहे हैं! अब ये प्रेम की बात है। तो उनसे परमात्मा ने कहा कि 'अच्छा, तुम ऐसा करो, तुम नीचे जा रहे हो ना, तो दोनों से एक ही बात कहो।' कहने लगा, 'क्या बात?' 'कि मैं भगवान के यहाँ गया तो एक सुई के छेद में से एक उन्होंने ऊँट को निकाला। बस, इतनी बात करना तुम।' तो ये

आये नीचे। पहले उनको वो मिला जो सर के बल खड़ा था। उससे कहा कि, 'भाई अच्छा हम आयेंगे कभी, भगवान ने कहा है।' 'तो और क्या देखा तुमने?' 'अरे, मैंने बड़ा आश्चर्य देखा कि उन्होंने सुई के छेद में से एक ऊँट निकाला।' वो कहने लगा, 'क्या झूठ बोल रहे हो? भगवान के यहाँ क्या हुआ ये मुझ से झूठ बता रहे हो।' फिर वो दूसरे आदमी के पास गया। 'अरे, खाने का तो इंतजाम हो जाता, मैंने सोचा ऐसे ही बता दे। तो और क्या देखा तुमने?' तो उसने बताया कि, 'एक आश्चर्य की बात है, कि एक सुई के छेद में से परमात्मा ने एक ऊँट को निकाला है।' अब इसमें जो सूक्ष्म बात है वो समझिये। तो वो कहता है कि, 'इसमें आश्चर्य कौनसा है? अरे वो परमात्मा है। वो ऊँट तो क्या दुनिया ही निकाल दे। न जाने विश्व का विश्व निकाल दें। वो परमात्मा है तुम क्या समझते हो उनको।' ये एक नितांत विश्वास है। क्योंकि आत्मसाक्षात्कारी आदमी को, उसका जो विश्वास होता है वो अंधा विश्वास नहीं होता है। वो साक्षात् में विश्वास, साक्षात्।

कोई भी चीज़ अंधे से मान लेना ये मनुष्य को शोभा नहीं देता। आप पहले इसका साक्षात् करिये। पहले आप सत्य को जान लीजिये और सत्य को जानने के बाद आप जानियेगा आप कितने महान और गौरवशाली हैं। अभी तो आप अपने बारे में जानते ही नहीं। जैसे कि किसी छोटे गाँव में चले जाईये। जहाँ बिजली नहीं, कुछ नहीं और टेलिविजन ले जाईये। और उनसे कहिये कि इसमें सब तरह की फिल्म आयेंगी, फोटो आयेंगे देखो। कहने लगेंगे, 'डब्बे में, इस डब्बे में।' 'हाँ, इसी डब्बे में।' जब उसका कनेक्शन हो जाता है, तब वो हैरान कि 'इस डब्बे में ये चीज़ कैसे आयी!' वैसे हम भी अपने को एक डिब्बा समझते हैं। और खास कर बंगाल में मैंने देखा है, कि इन्सान बहुत निराश रहता है, हमेशा और रोने के गाने गाता है। रोते ही रहता है। अब दिन बदल गये। ये समझना चाहिये, नया समय आ गया है। ये एक बड़ा एक विशेष समय, इसको मैं ब्लॉसम टाइम कहती हूँ। बसंत बहार कहती हूँ। लेकिन बहुत से लोग इतने निराश हो गये। इतने निराशा में फँसे हुये हैं। वो समझ ही नहीं सकते कि इस निराशा के बाद एक बड़ी भारी सुबह होनी जा रही है। जो सारे दुनिया में छा जायेगी। और वो आज का समय है।

कोई भी चीज़ अंधे से मान लेना ये मनुष्य को शोभा नहीं देता। आप पहले इसका साक्षात् करिये। पहले आप सत्य को जान लीजिये और सत्य को जानने के बाद आप जानियेगा आप कितने महान और गौरवशाली हैं। अभी तो आप अपने बारे में जानते ही नहीं। जैसे कि किसी छोटे गाँव में चले जाईये। जहाँ बिजली नहीं, कुछ नहीं और टेलिविजन ले जाईये। और उनसे कहिये कि इसमें सब तरह की फिल्म आयेंगी, फोटो आयेंगे देखो। कहने लगेंगे, 'डब्बे में, इस डब्बे में।' 'हाँ, इसी डब्बे में।' जब उसका कनेक्शन हो जाता है, तब वो हैरान कि 'इस डब्बे में ये चीज़ कैसे आयी!' वैसे हम भी अपने को एक डिब्बा समझते हैं। और खास कर बंगाल में मैंने देखा है, कि इन्सान बहुत निराश रहता है, हमेशा और रोने के गाने गाता है। रोते ही रहता है। अब दिन बदल गये। ये समझना चाहिये, नया समय आ गया है। ये एक बड़ा एक विशेष समय, इसको मैं ब्लॉसम टाइम कहती हूँ। बसंत बहार कहती हूँ। लेकिन बहुत से लोग इतने निराश हो गये। इतने निराशा में फँसे हुये हैं। वो समझ ही नहीं सकते कि इस निराशा के बाद एक बड़ी भारी सुबह होनी जा रही है। जो सारे दुनिया में छा जायेगी। और वो आज का समय है।

पर वर्तमान को हम नहीं जानते और वर्तमान असलियत है। तो विचार उठे, नीचे गये, फिर विचार उठे, नीचे गये। उसके बीच में एक जगह है उसे विलंब कहते हैं। पॉज। वो विलंब को हम नहीं पकड़ पाते जो वर्तमान है। या

तो आगे की बात सोचे या पीछे की। जैसे कि अभी इनको जाना है वापस। सोच रहे हैं कि ट्राम मिले की नहीं, बस मिले की नहीं, ये नहीं, वो नहीं। या तो पिछली बातें सोचते हैं। और अगर मैं कहूँ कि अभी वर्तमान खड़े हो जाईये, तो नहीं हो सकते। क्योंकि एक विचार उठा, खतम हो गया, दुसरा विचार उठा, खतम और हम उसके ऊपर में नाचते रहते हैं। लेकिन जब कुण्डलिनी जागृत होती है तो विचार लंबाकृत हो जाते हैं, ऐसे। रिलेक्स हो जाते हैं, लंबाकृत और उसके बीच में जो जगह बन जाती है और वर्तमान में आप खड़े हो जाते हैं और जब आपका चित्त वर्तमान में होता है, तो आप कुछ नहीं सोचते, निर्विचार। निर्विचार में आनन्द झरने लग जाता है।

अब जैसे यहाँ एक बड़ा सुन्दर कार्पेट हैं। एक उदाहरण के लिये। तो मैं कहूँगी कि, भाई, कितना सुन्दर है! और अगर ये मेरा है तो ये मेरे लिये सरदर्द हो जायेगा कि खराब न हो जाये, ये नहीं, वो नहीं। ये सब जो होते हैं प्रॉब्लेम्स कोई चीज़ पाने के। और मेरा नहीं दूसरे का है, तो मैं ये सोचूँगी, कितने का मिला, कहाँ मिला, कब पायेंगे ये लोग? लेकिन हम निर्विचार से देखे, तो जिस कलाकार ने इसको बनाने में अपना आनन्द लूट लिया है, वही आनन्द सर से ले के नीचे तक ठण्डा ठण्डा बहना शुरू हो जाये। और उस आनन्द में आप स्नात हो जाये। जब आप निर्विचार हो जाते हैं, तब आप अपने शांति में खड़े हो जाते हैं। शांति। ये कहने की बातें हैं। शांति के इन लोगों ने बड़े बड़े ऑर्गनाइज़ेशन बनाये हैं। शांति में ऑवॉर्ड्स दिये, ये, वो। मैंने तो बहुत से लोगों को देखा है, जिनको शांति ऑवॉर्ड मिले, इतने गरम होते हैं, इतनी गरम तबियत, कि उनसे अगर मिलना हो तो लकड़ी ले के जाईये सामने। नहीं तो जा कर के दो-चार झापड़ ही मार देना। आप कोई उनसे बात ही नहीं कर सकते, इतने गुस्सैले लोग। उनमें कोई प्रेम की झलक भी नहीं। वो क्या शांति दें और उनको इंटरनैशनल ऑवॉर्ड मिले। पता नहीं किस तरफ से देख कर दिये इंटर नैशनल ऑवॉर्ड। इस प्रकार हम लोग बिल्कुल भुलावे में रहते हैं। क्योंकि हमारे अन्दर की जब शान्ति प्रस्थापित होती है, तब हम समझते हैं कि शांत होना क्या होता है। जैसे कि आप पानी में खड़े हैं और आप परेशान हैं उसकी लहरों से। क्योंकि लहरे आ कर के आपको डरा रही हैं, कि कहीं डूब न जाये। पर अगर आप किसी नाव में चले जाये। तो आप लहरें देख रहे हैं और आपको मजा आ रहा है। आपको घबराहट नहीं। और अगर आप तैरना जानते हैं, तो कूदते हैं नीचे और जो डूब रहे हैं उनको बचा लेते हैं। इसी प्रकार सहजयोग में आपकी प्रगति होती है। पहले आप निर्विचार समाधि में उतरते हैं, फिर आप निर्विकल्प समाधि में। कभी कभी किसी किसी को दोनों एकसाथ मिल जाते हैं। ये बड़ी आश्चर्य की बात है। दोनों चीज़ एकसाथ घटित होती है। और इसमें इन्सान जो है शांति को भी प्राप्त कर लेता है और उन शक्तियों को भी प्राप्त करता है जो उसके अन्दर नहीं हैं। पर उसके लिये बाल मुंडवा ले या उसके लिये भगवा वस्त्र पहने, कुछ नहीं। ये सारे भाव अन्दर हैं।

आपको तो राजा जनक की कहानी मालूम है, मुझे नहीं बताना चाहिये। पर अब मैं जैसे गृहस्थ हूँ, मेरे पति ऐसे ऐसे हैं। चलो, उन्होंने कहा तो कपड़े पहन लिये अच्छे, काफ़ी जेवर पहने। जब किसी चीज़ को पकड़ा ही नहीं तो छोड़ेंगे क्या! अगर आपने पकड़ के रखा है तो छोड़ सकते हो। मैंने पकड़ा ही नहीं तो छोड़ूँ क्या! इस तरह की स्थिति संन्यस्त अन्दर से होती है बाह्य से दिखाने की नहीं होती। बाहर से कपड़े संन्यासी के और धंदे अन्दर चोरों के। इसका फायदा क्या! तो ये जो ढोंग है ये खतम हो जाता है। क्योंकि मानव अपनी इज्जत करने लगता है। अपना मान उसको होता है। उसके अन्दर एक तरह की चमक आ जाती है, कि मैं क्यों? और ये आत्मसाक्षात्कारी लोग ही दुनिया में बड़ा बड़ा नाम करते हैं। जैसे तिलक साहब। तिलक आत्मसाक्षात्कारी थे इसमें कोई शक नहीं है।

अब्राहम लिंकन थे वो आत्मसाक्षात्कारी थे। शास्त्रीजी थे वो आत्मसाक्षात्कारी थे। हम तो कहते हैं कि जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं वो लोग सत्य पे टिक ही नहीं सकते। आप कोई भी ऑर्गनाइझेशन ले लीजिये बस झगड़े शुरू आपस में। क्यों? क्योंकि असत्य पे खड़े हैं। इसलिये सब डावाडौल हो रहा है। तो पहले आपको प्राप्त करना चाहिये, कि अपने अन्दर की शांति। इस शांति को प्रस्थापित किये बगैर आप विश्व में कोई भी शांति नहीं कर सकते।

अब ये कहना है कि जिसको जाना है चले जाये। जिस वक्त में हम जागृति का कार्य करेंगे, तब उठ के जाने की कोई जरूरत नहीं। दोनों हाथ हमारी तरफ करें। और पहले तो आपको चाहिये, कि आप अपने को बिल्कुल क्षमा करें। इस वक्त अपनी गलतियाँ, पाप-पुण्य जोड़ने की जरूरत नहीं। और अब आँख बंद कर लें। चश्मा निकालें। जिनके पैर में जूते हैं वो जूते निकाल लें जो बैठे हैं ऊपर में लोग। अब लेफ्ट हैण्ड मेरी ओर करें इस तरह और सर झुका लें और सिर के उपर में आप अपना राइट हैण्ड यहाँ पर जो तालू है, इसे ब्रह्मरन्ध्र भी कहते हैं कि जो ब्रह्म में एकाकारिता करता है ऐसा छेद ब्रह्मरन्ध्र। अब इस पे राइट हैण्ड रखें, दूर, ऐसे। और देखें कि आपके ब्रह्मरन्ध्र में से ठण्डी या गरम कोई हवा जैसी चैतन्य की लहरियाँ आ रही है क्या। जिसको की आदि शंकराचार्य ने सौंदर्य लहरी कहा था। नीचे सर झुकायें। अब मेरी ओर राइट हैण्ड करें और फिर से अपना सर झुकायें और लेफ्ट हैण्ड से, सर पे हाथ नहीं रखें, सर से दूर, सर झुका के। लेकिन शंका नहीं करने की। आप ही के सर से ठण्डक आ रही है। शंका नहीं करनी है। सर झुकायें। अब अगर गरम आ रहा है, तो इसका मतलब ये है, कि आपने अपने को या दूसरों को क्षमा नहीं की। तो अभी आप क्षमा करें। और इस वक्त ये माँगना है कि, 'माँ, हमें आत्मसाक्षात्कार दीजिये।' आप माँगिये मन में कि, 'माँ, कृपया आत्मसाक्षात्कार दीजिये।' मैं जबरदस्ती नहीं कर सकती। मैं आपकी जो स्वतंत्रता है, उसको नहीं छू सकती। क्योंकि अगर स्व का तंत्र बताना है, तो उसके लिये जरूरी है कि आपकी इच्छा से सब होगा।

अब फिर से राइट हैण्ड से आप देखिये और कहिये की, 'माँ, मुझे मेरा आत्मसाक्षात्कार दीजिये।' राइट हैण्ड से। अब दोनों हाथ आकाश की ओर करें और सर ऊपर की तरफ और यहाँ एक प्रश्न पूछे अपने मन में, विश्वास के साथ, 'माँ, क्या ये परमचैतन्य की लहरें हैं?' प्रश्न करें तीन बार। अन्दर अपने हृदय में पूछिये। 'माँ, क्या ये परमचैतन्य की लहरें हैं?' सर पीछे थोड़ा। आत्मविश्वास के साथ पूछिये। शंका नहीं करने की। अब हाथ नीचे करें। अब दोनों हाथ मेरी ओर करें, इस तरह। चश्मा पहन लें और मेरी ओर देखें और विचार नहीं करें। आपके विचार ठहर गये। निर्विचार। यही निर्विचार समाधि। अब जिन लोगों के हाथ में या उंगलियों में या ब्रह्मरन्ध्र से ठण्डी या गरम हवा आयी हो, वो दोनों हाथ उपर करें। वा, वा! क्षणभर में सब पार हो गये। सब ने प्राप्त कर लिया। अब इसको आगे बढ़ाना है।

आप सारे आत्मसाक्षात्कारी लोगों को हमारा वन्दन!